भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 29 अंक : 6	15.11.2006 बुधवार (नवंबर - दिसंबर)	प्रति अंक : 10.00

'बड़े घर दिवाली शिविर'

नवरात्रे, दशहरा - शरद्पूर्णिमा इत्यादि उत्सवों के माहौल में ही आगामी उत्सवों - त्यौहारों यानि – धनतेरस, दीवाली, अन्नकूट, हिन्दु नूतन वर्ष, भैयादूज, लाभपंचमी की आहट सुनाई पड़ने लगती है। त्यौहारों से उत्पन्न उमंग - उल्लास - रौनक का माहौल हर एक के दिलों को आंनदित करता है। सामान्यतः जगत में लोग नए वस्त्र, गहने, बर्तन इत्यादि खरीदते हैं। ऐसा करेंगे - वैसा करेंगे, घर को ऐसा सजाएंगे तथा रिश्तेदारों - मित्रों को यह उपहार देंगे ऐसे व्यवहार-योजनाओं में लोग व्यस्त रहते हैं। खूब गहराई से देखें तो ये ख़ुशी तो अस्थायी होती है, पर जगत में इसी को दीवाली मनाई कही जाती है ; जबकि प्रगट स्वरूप से जुड़े मुक्त दीवाली के दिनों में अंतर्दृष्टि करके स्याने व्यापारी की भाँति अपना लेखा-जोखा निकालता है। जैसे कि –

मेरे स्वभाव कितने बदले ?

पिछले साल मैं कहाँ - कहाँ प्रत्यक्ष स्वरूप की मर्जी में रहने में चूक गया।

या

मुक्तों के पास कहाँ-कहाँ मैंने अपनी हठ-अपना ईगो पकड़े रखा या पीछे हठ नहीं करी।

या

हठ, मान, ईर्ष्या के भावों में आकर मैंने कहाँ-कहाँ, कैसा-कैसा वर्तन किया।

और... साथ ही उसे नए वर्ष की नई उषा के नए उजाले में पल-पल भीतर में नई उमंग-उल्लास भी होता है कि –

- *मैं मुझे मिले प्रगट प्रभु को अब किसी प्रकार राजी कर ही लूं।*
- *इस साल कैसे भी संजोगों की कसनी में मैं नापास ना होऊँ।*
- *किसी मुक्त के साथ कोई गांठ पड़ गई हो वह छोड़ कर, उसी के साथ एक मन हो जाऊँ।*

यूं, स्वरूप की सेवा, दर्शन, समागम करते हुए मुमुक्षु के भीतर यही प्रार्थना बहा करती है। और... प्रगट प्रभु के बल से आध्यात्मिक पथ पर आगे कदम बढ़ाने - सत्पुरुष से अपना संबंध दृढ़ कर लेने कृतनिश्चयी बनता है। यह है प्रगट प्रभु से जुड़े मुक्तों की **दीवाली – नूतन वर्ष**! जगत की दीवाली तो आकर चली जाती है, पर ऐसे पर्वों में अहोभाव से करी सेवा के फलस्वरूप हमें खूब परेशान करते स्वभाव छूट जाते हैं, सो हमारे दिल में तो **'अखंड दीवाली'** बनी रहती है।

हमारे जीवन में **'दीवाली'** अखंड बनी रहे ऐसी करामात पाने, पिछले वर्ष आयोजित **'बड़े घर दीवाली शिविर'** के प्रति अमदावाद-मुबंई के मुक्तों और दिल्ली के गुणातीत परिवार एवं खास करके प.भ. मल्कानी अंकल ने जो ख़ुशी से सुरुचि प्रकट करी, उनकी सुरूचि को साकार रूप देने अबकी बार भी प.पू. गुरुजी ने इस शिविर का आयोजन करवाया। **जीव को अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर देख सत्पुरुष भी कितने गरजु बनते हैं, उसका सहज ही दर्शन हुआ।** छुट्टी के दिनाँक इत्यादि देख कर प.पू. गुरुजी ने दो महीने पहले ही 'शिविर' के बारे स्थानीय एवं बाहर के सभी हरिभक्तों को सूचना तक दे दी ताकि व्यापार-नौकरी इत्यादि से छुट्‌टी कर लेने एवं समयावधि में रेलवे बुकिंग करा लेने की उन्हें सुविधा रहे।

इतने सारे मुक्त जब संत समागम के लिए उत्साहित होकर आध्यात्मिक पथ पर चलने तैयार हों, तो भला श्रीजी महाराज भी राजी होने कैसे पीछे रहते? उन्होंने भी दो महीने पहले मानो हरी झंडी दिखा दी। एक अत्यंत सांकेतिक घटना घटी! अगस्त महीने में अमदावाद से प.भ. समीरभाई दिल्ली आए हुए थे। तभी प.पू. गुरुजी ने प.भ. समीरभाई को कहा कि आज रविवार है; तुम अमदावाद फोन करके शिविर की ये तारीखें बता दो, जिससे आज सभा में उपस्थित सभी मुक्तों को बता दिया जाए और वे सब समय से ट्रेन की टिकिटें बुक करा सकें। उस दिन अमदावाद में सभी प.भ. संजयभाई शाह के यहाँ एकत्रित हुए थे। प.भ. समीरभाई ने तुरंत वहाँ फोन करके सारी बात करी। प.भ. समीरभाई के फोन के बाद हर सभा की भाँति **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** की बातें पढ़ने स्मृति करके जब पृष्ठ खोला गया, तो **प्रकरण-६** की **२४७वीं** निम्न **बात** निकली –

'हमने तो लिख दिया है कि – बारह महीने में एक महीना साधु का समागम करना; उसके बिना कसर मिटती नहीं और भाई, रुपये तो मिलेंगे, लेकिन ये बातें कहाँ मिलेंगी? सो, बातें सुन लेनी। कोई कहेगा कि खर्चा कर-करके बार-बार सेवा करेंगे। तब भी क्या? एक राळ * खर्चोगे तो हम चार हज़ार दे देंगे। लेकिन, यह ज्ञान सुने बिना कसर टलेगी नहीं। फिर भी, कोई यहाँ रहता नहीं है। अरे भाई! यदि कोई यहाँ रहता हो और उसे आमदनी में घाटा पड़ता हो, तो एक महीने की धर्मादा-राशि में से काट लेना। अरे! यदि आप रहते हो, तो हम यहाँ से महीने के दस रुपये आपके घर भेजेंगे। फिर तो ठीक है ना! कितने रहेंगे? ज्यादा से ज्यादा तो चार सौ जने रहोगे। फिर भी मंदिर में रुपये कम नहीं होने वाले, लेकिन ज्ञान कितना मिलेगा? अरे! आप नहीं समझते; लेकिन सोने का घर हो, उसे जला कर ये बातें सुननी चाहिए। बाद में ये बातें दुर्लभ हो जाएंगी। दसवां-बीसवां हिस्सा निकालने तो महाराज ने भी कहा है। आप मानो या ना मानो, हम तो कहे देते हैं। कोई लाख रुपये खर्चे, उसकी अपेक्षा मुझे तो वह यह मंदिर की रोटी खाकर बातें सुने वो अधिक है। ये बातें कहाँ से मिलेंगी? मर कर जिन्हें पाने थे, वे साधु और भगवान तो जीतेजी ही मिल गए हैं।'

सभी हरिभक्त तो यह पढ़ कर भौचक्के हो गए कि अभी-अभी तो प.पू. गुरुजी का शिविर के बारे मेसेज आया और यही बात निकली!

प.पू. गुरुजी को जब फोन पर यही बात बताई, तो अमदावाद दोबारा फोन करवा कर प.पू. गुरुजी ने कहलवाया कि २४८वीं बात भी पढ़ो। इस बात में भी स्वामी ने कहा है कि – **'सोनानां खोरडां बाळीने आ वातु सांभळवी'** यानि – सोने की हवेली जला कर भी ये बातें सुननी। **ये बातें पढ़ कर जिनका मन शिविर में आने के लिए कच्चा-पक्का था, उन्होंने भी पक्का मन बना लिया!**

---

* पुर्तगाली चलनी सिक्का।

यूं , प.पू. गुरुजी ने खुद गरज रख कर-परिश्रम लेकर करीब १५ दिन के लिए सभी हरिभक्तों को बुला लिए! और... सब के सब आत्मीय मुक्तों ने भी उसी दौरान दिल्ली आने की टिकिट बुक करा ली।

शाम को प.पू. गुरुजी ने इसी बात पर स्वयं अंतर्दृष्टि करते हुए समझाया कि – पंद्रह दिन की शिविर का सोच कर एक बार तो मेरे मन में भी विचार आ गया था कि इस शिविर से मंदिर पर ज्यादा फाईनेन्शियल लोड पड़ जाएगा। पर, स्वामी ने यह बात निकलवा कर मानो मेरा भी जवाब दे दिया है कि सत्संग की जब यह महिमा है, तो तू क्यों ऐसी प्राकृत व घटिया सोच में जाता है? और... शिविर के लिए समय दे पाएं इस हेतु प.पू. गुरुजी भी स्थानीय मुक्तों से इज़ाजत लेकर इस साल दीवाली की पधरावनी के लिए कहीं नहीं गए!

प.पू. गुरुजी की यह एक अनुपम विशेषता है कि उन्हें 'स्व' की कोई अस्मिता नहीं है। इसीलिए वे भरी सभा में भी अपने मन की बात खूब निखालसभाव से कह देते हैं। वे कभी ऐसा भी नहीं सोचते कि सभा में बैठे मुक्त भला मेरे बारे क्या सोचेंगे? और... सभा में कई ऐसे **मंदबुद्धि** भी होते हैं, जो **इन बातों को अपना एक ऑक्सक्यूझ बना लेते हैं**; जैसे कि– भई, संत भी जब ऐसी सोच में फिसल जाते हैं, तो हमारी क्या औकात? पर, वे यह नहीं समझते कि संत के ऐसे चरित्र द्वारा प्रभु हमें हमारी सोच बदलने चेतावनी दे रहे होते हैं। यूं पंद्रह दिन की शिविर के आयोजन पर मानो स्वयं श्रीजी महाराज व मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी मोहर लगा दी... मुक्तों को भी भीतर में अनुभूति करा दी कि प.पू. गुरुजी जैसी प्रभुधारक विभूति के वचन से हम आत्मा की प्रगति के लिए आध्यात्मिक पथ पर सही दिशा-सही रास्ते पर दौड़ रहे हैं।

१३ अक्तुबर को ट्रेन से निकल कर अमदावाद-मुबंई के करीब ४०-४५ मुक्तों का काफिला १४-शनिवार की दोपहर दिल्ली पहुँच गया और इस दिन से मानो दीवाली का मंगल प्रारंभ हुआ... अबकी बार शरदपूर्णिमा की रात को गरबे-रास का कार्यक्रम ना रख कर दिल्ली, अमदावाद, मुबंई के मुक्त सभी मिल कर साथ में आनंद कर सकें इसीलिए **१४ की सायं अक्षरज्योति की बहनों ने 'गरबा-रास' प्रतियोगिता का कार्यक्रम रखा था।** आनंद के साथ-साथ मुक्तों को प्रोत्साहन रहे, सो पाँच निर्णायक बिठाए गए। निर्णायक थे – प.पू. गुरुजी के साथ एक अनोखी प्रीति व आत्मीयता से जुड़े **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब**, सुप्रसिद्ध ललित कला के आर्टिस्ट **प.भ. अमृतभाई पटेल साहेब** – जिन्होंने समय-समय पर दिल्ली मंदिर के बड़े उत्सवों की पृष्ठभूमि चित्रित करने हमेशा सहाय दी है। गुजरात एपार्टमेन्ट की **सौ.जयाबेन महेता** और हमारी **प.पू. दीदी** व **पू. परछाईं**।

गरबे में सभी ने बहुत आनंद किया। **प.भ. मल्कानी अंकल** सारा माहौल देख कर बहुत खुश हुए... और अन्नकूट के दिन तो सभा में बोले भी –

''उस दिन – जो गरबा कर रहे थे, जो देख रहे थे, जिन्हें प्राईझ मिला, जो प्राईझ के लिए एन्टाईटल्ड थे - पर प्राईझ नहीं मिला वे भी और जो खाना बनवा रहे थे, जो गॅईट पर खड़े थे उन सभी के मुख पर आनंद था। किसी के चेहरे पर मात्रभर भी रंजिश नहीं थी; आनंद में थे वो भी... अंग्रेजी में कहूँ तो इट वॉझ लाईक धी कीस ऑफ गॉड। 'महाराज हाजिर थे' – ऐसा एहसास हो रहा था...''

इसी दिन रात को करीब पौने बारह बजे प.पू. गुरुजी ने पुण्य का जतन कैसे करना, वह बताते हुए कहा कि – *'मैं चाहता हूँ कि आप सब सारे रीति-रिवाज छोड़ कर दीवाली में अपना घर बंद करके 'बड़े घर-दीवाली' मनाने अमदावाद-मुबंई से यहाँ आए हो तो* ***पुण्य की गठरी बाँध कर जाओ। फिर सारा साल उसमें से खाया करो।*** *तो जो यहाँ आए हैं, वो जितने दिन यहाँ रहें, उतने दिन प.पू. काकाजी की पुष्पसमाधि पर १०१ परिक्रमा रोज जरुर करें।*

*लेकिन उसमें एक दूसरी बात ध्यान रखना कि **जो पुण्य कमाओ, वो गवाँना नहीं।** जैसे कई बार हम किसी बर्तन में कोई चीज भरते रहते हैं, लेकिन यदि उस बर्तन में नीचे बड़े-बड़े छेद होंगे, तो उस बर्तन में कुछ टिकेगा ही नहीं। ठीक उसी प्रकार दस-पंद्रह दिन आप सब जो यहाँ रहो, उस दौरान कोई 'ग्राम्यवार्ता' नहीं करना। ग्राम्यवार्ता का सामान्य अर्थ तो यह है कि बाजार की-व्यवहार की बात, जगत की बातें वगैरह...पर, 'ग्राम्यवार्ता' का विशेष अर्थ यह है कि – सत्संग में फलां ऐसा-फलां वैसा ; वो तो ऐसा करता है-वो तो वैसा करता है ; उसके यहाँ तो ऐसा है-उसके यहाँ तो वैसा है वगैरह चर्चा करना। तो, ये बातें नहीं करना। **वर्ना परिक्रमा की पुण्य की गठरी छेद वाली हो जाएगी और फिर अपने-अपने स्थान पर लौटोगे तो कहोगे कि कुछ मिला नहीं।** यह बात खूब ध्यान में रखना। आपस में बातें करते-करते भी परिक्रमा नहीं करना। भीतर में संत की स्मृति के साथ 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करते-करते परिक्रमा करना। प.पू. काकाजी कहते – **अपना मौन भी निष्क्रिय नहीं है, बल्कि सचेतन सक्रिय मौन है।** समाधि स्थान की परिक्रमा मन में अजपाजप करते हुए कर सकते हैं... जोर-जोर से मंत्र जाप करते हुए ताली मार कर भी कर सकते हैं।*

ये दो बातें ध्यान में रखेंगे तो इसका रिझल्ट अलग आएगा। हमारी प्रकृति बदल जाएगी, हमारा प्रारब्ध टल जाएगा। दोनों चीजें हो जाएंगी।'

१५ अक्तुबर की सायं ६:३० बजे से **'बड़े घर दीवाली शिविर'** की शुरुआत हुई... अबकी बार प.पू. गुरुजी ने **'योगीजी महाराज की सत्संग कथाएँ'** पुस्तक में से छोटे-छोटे लेकिन अद्‌भुत सूझ देने वाले प्रसंग पढ़वा कर समझाए। यूं, २८ अक्तुबर तक तकरीबन रोज सायं ६:३० से ८:३० सभी ने प.पू. गुरुजी से 'सत्संग' की सही परिभाषा समझी और उस राह पर चलने कई चाबियाँ पाई।

१९ अक्तुबर – धनतेरस निमित्त सायं **महापूजा** का आयोजन था। प.पू. गुरुजी की निश्रा में **पू. यज्ञप्रियस्वामी** ने ठाकुरजी के समक्ष महापूजा करी। पूरा वातावरण दिव्य आंदोलनों से भरा-भरा था। महापूजा के पश्चात् **प.पू. दीदी** ने सभी को बरकत का **'ख़ज़ाना'** दिया। पिछले वर्ष ही संबंध में आए प.भ. विश्वास पंडयाजी की माताश्री **पू. अनसूयाबहन** भी अन्नकूट उत्सव के लिए आज के दिन आ गई थीं। सो, उनको यह महापूजा का भी अच्छा लाभ मिला।

दूसरे दिन यानि-**२० अक्तुबर** को **कालीचौदस** के दिन भी सायं सभा हुई। और... अगले दिन **२१ अक्तुबर-दीवाली** की सुबह तो एक ओर अन्नकूट के प्रसाद की सब्जियाँ साफ करने-काटने की सेवा बहनों-भाभियों ने शुरु करी। दूसरी ओर – मंदिर के मुख्य द्वार पर फूलों की लड़ियाँ सुसज्जित की जा रही थीं। साथ ही समाधि स्थान के लिए फूलों की लड़ियाँ पिरोने की सेवा और पीछे के पार्क में सभा मंडप की पृष्ठभूमि-सुसज्जा का कार्य खूब भक्तिभाव से संत, युवक एवं अमदावाद-मुंबई के हरिभक्त कर रहे थे। सारा दिन सेवायज्ञ जारी ही रहा।

रात को आठ से नौ छोटी सभा में उपस्थित दो-तीन हरिभक्तों ने अपने अनुभवों को व्यक्त किया। सभा के पश्चात् प.पू. गुरुजी ने बाहर बैठक में झूले पर सभी को निराले दर्शन दिये। करीब साढ़े दस बजे **सौ. प्राची के माता-पिता प.भ. सुधीरभाई शाह** एवं **सौ. नीता बहन** मुंबई से आए। मंदिर आते ही उन दोनों का मानो आनंद समाता ही नहीं था। वे बोले कि ऐसा माहौल हमने तो कभी देखा ही नहीं। **सौ. नीता बहन** तो यहाँ तक **बोले** कि– ***'मैं कई जगह घूमी हूँ, कई आश्रमों में गई हूँ। लेकिन, प.पू. गुरुजी जैसे गुरु मैंने नहीं देखे, जो पर्सनली हर एक भक्त के साथ इतना अधिक इनवॉल्व होते हैं।'*** प.भ. सुधीरभाई शाह एवं सौ. नीता बहन ने प्रसाद लिया और **रात को सवा ग्यारह बजे** प.पू. गुरुजी थोड़े हरिभक्तों को लेकर **प.भ. पवन खण्डेलवालजी**

के घर गए। करीब **साढ़े बारह बजे प.पू. गुरुजी मंदिर वापिस आए!**

दीवाली की अर्धरात्रि को एक ओर सभा मंडप तैयार हो रहा था, तो दूसरी ओर बहनों ने समाधि स्थान को फूलों से सजाना शुरु किया। **पू. सुहृद्स्वामी** के नेतृत्व में प.भ. राजुभाई शाह, दिलीपभाई शाह, प.भ. बुधरामजी ने भी तकरीबन २००० मुक्तों के अन्नकूट प्रसाद के लिए कढ़ी, चावल, मिक्स सब्जी बनानी शुरु कर दी थी। उधर भाभियों ने भी अपने-अपने घरों में जाग कर ठाकुरजी को धराने के लिए व्यंजन तैयार किए।

२२ अक्तुबर-अन्नकूट की सुबह सात-साढ़े सात बजे घरों से व्यंजन लेकर आते हरिभक्तों का तांता लग गया। हर साल की भाँति सुबह से ही चहल-पहल, रौनक व उमंगभरा नज़ारा ताड़देव के परिसर को महका रहा था। सुबह १०:०० बजे प.पू. गुरुजी सभा मंडप में पहुँच गए थे। प.भ. राकेशभाई एवं प.भ. विनोद ने भजन गाकर ठंडी हवा में मानो भक्ति भर दी। और... हर वर्ष की तरह प.भ. राकेशभाई ने दीवाली कार्ड का संदेश पढ़ना शुरु किया। साथ ही प.पू. गुरुजी ने कार्ड के संदेश को समझाते हुए आशीष वर्षा करी।

प.भ. मल्कानी अंकल के मित्र उद्योगपति **श्री विनोद कपूरजी** एवं हमारे आत्मीय स्वजन **श्री मांगेराम गर्गजी** समय से अन्नकूट आरती के लिए पहुँच ही गए थे। सो, बारह बजे के करीब अन्नकूट आरती के लिए प.पू. गुरुजी व हरिभक्त ठाकुरजी के हॉल में गए। बहनों-भाभियों ने क्लोझ सर्कीट टी.वी. द्वारा आरती के दर्शन करे। आरती के बाद सभी ने ठाकुरजी के समक्ष लगे करीब पौने छः सौ व्यंजनों के अन्नकूट का दर्शन किया। तत्पश्चात् कढ़ी, चावल, मिक्स सब्जी के महाप्रसाद को लेकर सभी धन्य हुए। सायं ४:०० बजे तक अन्नकूट दर्शन का सभी ने लाभ लिया।

तत्पश्चात् उन सभी व्यंजनों को पंक्तिबद्ध नीचे टंकी पर लाया गया। जो व्यंजन ज्यादा समय रखे जा सकते थे, उन्हें अन्य हरिभक्त जो अन्नकूट के लिए नहीं आ सके, उन्हें प्रसादरूप भेजने के लिए रखा गया। अन्य ताजे बने व्यंजनों का प्रसाद उपस्थित हरिभक्तों ने लिया। और... साथ ही एक ओर बहनों-भाभियों ने अन्नकूट के बर्तन साफ करने शुरु किए, तो दूसरी ओर भाईयों ने प.पू. गुरुजी के समक्ष गरबा व भांगड़ा किया। बर्तन साफ हो जाने के बाद प.पू. दीदी के सान्निध्य में समाधि स्थान पर बहनों-भाभियों ने भी गरबा किया। रात को साढ़े आठ बजे सभी नीचे रिसेप्शन हॉल में एकत्रित हुए और गृहस्थ भाई-भाभियों को ठाकुरजी की प्रसादी का पान दिया गया। और... अन्नकूट २००६ की स्मृतियाँ लेकर सभी अपने-अपने घर गए।

इस वर्ष अन्नकूट के दूसरे दिन यानि **२३ अक्तुबर** को **हिन्दु नूतन वर्ष** का प्रारंभ हो रहा था... सो, सायं 'बड़े घर दीवाली शिविर' की सभा हुई। **प.भ. सुधीरभाई शाह** ने* अपने अनुभव सभी के समक्ष व्यक्त करके शायद **सभी को एहसास करा दिया कि प.पू. काकाजी ने हम सभी को कैसी भव्य-अनमोल गोद में बिठा दिया है! प.पू. गुरुजी की साधुता और उनके द्वारा क़वायत को पाया यह दिव्य समाज 'शाह दम्पति' को कितना स्पर्श कर गया होगा कि मुंबई जाकर फोन पर सौ. नीता बहन भावभरे हृदय से बोले – *'वो तीन दिन जो हमने दिल्ली मंदिर में गुजारे, वो तो हम जिंदगीभर भुला नहीं पाएंगे!'***

२४ अक्तुबर की सुबह सभी भाईयों ने **प.पू. दीदी** से **भैयादूज** का पूजन करवाया। सुबह करीब ग्यारह बजे अमदावाद-मुबंई से आए हरिभक्त प.पू. गुरुजी के साथ **प.भ. विजयपालजी** के यहाँ भैयादूज निमित्त गए। वहां दोपहर का प्रसाद लेकर सभी मंदिर लौटे। सायं प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सभी ने शिविर का लाभ लिया। यूं दो दिन लगातार सभा के बाद **२६ अक्तुबर की सायं को 'बड़े घर दीवाली शिविर' की पूर्णाहुति हुई।**

---

* पढ़िये पृष्ठ ७ पर श्री सुधीरभाई के उद्‌गार

अमदावाद से **सौ. रश्मिका भाभी** इस शिविर में आए हुए थे। २५ अक्तुबर की रात को अचानक अमदावाद में उनके पति प.भ. उदयभाई को एपन्डीक्स का खूब दर्द हुआ और... संदेशा आया कि तुरंत उनका ऑपरेशन करना पड़ेगा। यह सुनने के बावजूद भी सौ. रश्मिका भाभी खूब स्थिर रहे। उनकी यह स्थिरता प.पू. गुरुजी के कारण थी। वे प.पू. गुरुजी के भरोसे निश्चिंत थीं। वर्ना तो प्रसंग पर प्रत्यक्ष स्वरूप को कर्ता-हर्ता मान कर निश्चिंत रहना खूब कठिन-नामुमकिन होता है। उनकी जगह और कोई हो तो तुरंत अमदावाद पहुँच जाने की चेष्टा करता। जबकि उन्होंने तो अमदावाद जाने की सामने से मना कर दी और सहज ही बोलीं– **प.पू. गुरुजी यहाँ बैठे-बैठे सब संभालेंगे।** यह कहना ही प्रमाणित करता है कि उन्होंने सही सत्संग किया है और प्रगट प्रभु से संबंध दृढ़ करके उन्हें ही प्रसंग पर कर्ता-हर्ता माना है। तभी तो ऐसे सेवक ही साधु की एसॅट होते हैं...

२७ अक्तुबर–लाभपंचमी निमित्त प.पू. गुरुजी **'गुजरात एपार्टमेन्ट्स'** गए। वहाँ सामूहिक पधरावनी के तौर पर सभा का आयोजन किया था। इस दिन तो प.पू. गुरुजी ने सभी को एक अनोखी ही स्मृति दी। करीब पाँच सौ-साढ़े पाँच सौ मुक्तों के लिए प्रसाद की व्यवस्था करनी थी। लेकिन, प.पू. गुरुजी ने हलवाई द्वारा भोजन बनवाने के लिए साफ मना कर दिया और कहलवाया कि गुजरात एपार्टमेन्ट्स व उसके आस-पास के हरिभक्त आईटेम्स बांट लें और अपने-अपने घरों से बना कर ले आएं। यहाँ तक कि अमदावाद-मुंबई से आए हरिभक्तों-भाभियों को भी २७ अक्तुबर की सुबह से डॅकोरेशन व रसोई की मदद के लिए भेज दिया। दरअसल **ऐसे संतों को अच्छे खाने या अच्छे डॅकोरेशन से कोई लेन-देन नहीं होता। बल्कि, हम अपने मन की गांठें छोड़ कर एक-दूजे का स्वीकार करके, मिलजुल कर किस प्रकार ब्रह्मानंद में रहें और हँसते-खेलते प्रभु की मूर्ति का सुख लेते हो जाएं** –उसके लिए यह सारा उद्यम होता है। और... इसी कारण उस दिन सहजता से सारी सेवा तो हुई ही, साथ ही प.पू. गुरुजी के भीतर की प्रसन्नता भी सभी को खूब स्पर्श हो रही थी। प.पू. गुरुजी ने सभा में श्रीजी महाराज के दो-तीन प्रसंग पढ़वा कर आशिष प्रदान किए। सभा के बाद सभी ने दिव्य कुटुंब के सदस्यों के हाथों से बना प्रसाद लिया और अपने-अपने घर के लिए प्रस्थान किया।

२८ अक्तुबर, शनिवार दिल्ली गुणातीत कुनबे की 'शब्बे रात' थी। सभी जानते हैं कि अन्नकूट के बाद जो शनिवार आता है, उस दिन रात को प.पू. गुरुजी सभी हरिभक्तों के साथ ठाकुरजी के समक्ष हॉल में सोते हैं- सभी मिलकर आनंद करते हैं। अबकी करीब दो सौ हरिभक्त इकट्ठे हुए। सायं ७:३० से ९:३० धुन-भजन-कथावार्ता का सभी ने लाभ लिया। तत्पश्चात् सभी ने प्रसाद लिया। उपस्थित बहनें-भाभियाँ तो अपने-अपने घर गए; पर 'शब्बे रात' फ्लॉप गई ; सो हरिभक्त मंदिर में ठाकुरजी के हॉल में जल्दी सो गए...

२९ अक्तुबर का दिन तो **अमदावाद-मुंबई** के **हरिभक्तों की विदाई** का दिन था। दिल में एक ओर प.पू. गुरुजी व दिव्य कुटुंब से बिछड़ने का दर्द था, तो दूसरी ओर प.पू. गुरुजी द्वारा दी ढेरों स्मृतियों का ख़जाना साथ ले जाने का हर्ष भी था! फिर भी –**आख़िर में 'विदाई-भजन' जब गाया गया, तो सभी का अश्रुबंध टूट गया और सब के सब रो पड़े –अरे! बिलख-बिलख कर रोए!** पर, ये श्रीजी महाराज की अपने आश्रितों पर अनहद् कृपा है कि वे अपने संतों द्वारा पृथ्वी पर ही नहीं, बल्कि संबंध वाले हर एक मुक्त के हृदयाकाश में भी विराजते हैं। **यूं , प.पू. गुरुजी को-उनके दिए बेहद प्रेम को अपने हृदय में भर कर सभी ने दोपहर को विदाई ली!**

('बड़े घर दीवाली शिविर' की कथावार्ता से दूर-सुदूर हरिभक्त भी लाभांवित हो सके, सो आगामी भगवतकृपा के 'श्रवण, मनन, निदिध्यासन' के अंतर्गत निचोड़ रूप देते रहेंगे...)

❋ प.पू. गुरुजी, साधु, साध्वीजी...

ये मेरा भाग्य है कि आज गुरुजी ने मुझे दो शब्द बोलने का chance दिया I It would be appropriate for me to speak about my two days of experience. Well, my daughter has been here. She has been honoured more than what she deserved probably. My son Tejas been here almost a part of you all and I have been told – he spoke so well that I am scared because I am going to be compared with my son and my daughter. But obviously, since I have been here for last two days, which is almost I would say –is more than two lives for me.

I remember very well. गो माता होती है ना, उसका बछड़ा होता है I वो बछड़ा सुबह से खेतों में खाना खाने के लिए जाता है I दिनभर he is away from his mother – for almost eight hours - ten hours. ख़ुश होता है क्योंकि हवा अच्छी होती है, खाना अच्छा मिलता है - भागदौड़ होती है I He has been jumping around. लेकिन जब शाम होती है, तो उसकी mother खींच लेती है I When he comes back and be with her mother, the kind of love & experience he gets – he gets delighted. **I think exactly the same position I am in today.**

Fortunately, I have a little background of my family, I would rather tell you - very interesting. See, my father – You know we are of course, I mean its relevant because आपने जो संतवाणी अभी तक सुनी है, मैं तो मनुष्य हूँ - मनुष्य वाणी बोलूँगा ; My father, we are 'Jains'. I mean, I certainly do not at all believe in religion as such, but well I am jain. I remember I was a little kid and we come from a very - very small village. My father has been educated – those days he was M.Sc. He knew Bhagwatgita by heart when he was eleven. But he was denied the first award by Sangli Maharaj, because we were jain & not Brahmins. However, he decided to be teacher and he had taken a vow that he will teach only Harijans. Believe me he started under the tree and that after about twenty years, the school which was under the tree has become three storey building. But I know समाज ऐसा होता है ना कि हमको बोलते थे कि ये देखो जैनहरिजन आ गए I तब मैं कुछ समझता नहीं था I लेकिन ये जो प्रेरणा मुझे मिली कि ये क्या है ? I mean why people believe in religion ? Why people talk about religion ? Well, human beings are human beings. There is no difference if it is black or grey or white. इसी background से actually हम आ रहे हैं I सो, 'संस्कार' जो बोलते हैं, वो मेरे बचपन से हैं I

Fortunately, we have been vegetarian for all along – Very proud to tell you because I have travelled more than hundred & thirty countries. And I know when I was in country like Bangladesh, which is very close to us. I was there when I was in 1973 - 74 ; stayed there for fourty five days and there you didnot get even milk – forget about vegetarian rice. It was always mixed with something non-vegetarian food. So, I had to remain hungry, but still its a sanskar which are very important. And after thirty years of my experience being an executive in various capacities, various companies, I have been talking to Guruji also for last two days that – you know – we stay constantly in an image that's called ego and we executives definitely have high level of egos for

the very simple reason –we think that-'Oh! I am a chemical engineer. I have done my M.B.A. from Oxford University. I have travelled thirty countries and hundred countries. I can set up a big project, I can plan things.' We discussed that and I was really overwhelmingly joyed and thought that **what I have learnt in thirty years, was nothing when I read this !** I mean **its amazing that what we are doing for thirty years, was all along wrong and baseless when I read this,** I mean, its amazing. **My eyes are totally opened after thirty years of experience. I wish I could have met you thirty years back.**

But I definitely tell you its all again what my son said — That Ekta Kapoor should be congratulated, because she is the one who has brought us here. And definitely its my daughter and my son who has been literally – they are out of world, they are overjoyed. They said Papa you have to come and that's it. Believe me he booked the tickets from here and he said Mummy and Papa are coming. And I said **there cannot be better fortune than this. It's blessing in disguise that my son has to teach me today. It's all because of Guruji. I am really overwhelmingly joyed, I am extremely happy.** You know I have been learning – its a great thing- the ego is speaking – I have been taught by people like Tom Peter or Peter Drucker. You know, they are the big names in the management. We call them as the management Gurus. And I keep on saying that O.K. What they teach is excellent that we must follow that, fine. I mean – that's what I have been learning.

But today what I saw here in last two days. There is a hundred and eighty degrees difference between what we learnt and what you practice. It's amazing. I am sure most of the people must have heard, about Peter Drucker and Tom Peter-the big names. But what you are doing ? What you are practising ? It's, I come to the conclusion that **you don't have to learn to practice. Practice comes from within.** So, every human being like me, probably we are after success. You know, everybody wants to be successful in life. Unfortunately **even after thirty years of my executive life, I don't know what success is ? But certainly, after coming here for last two days I am very clear about what success is, because I was defining success as 'SUCCESS' right ?**

'S' is Sheer desire. We call it as a sheer desire which should come from bottom of your heart. I learnt this, but what I have seen here, is I have seen it and I have experienced it from you people. The way you have been working and with total willingness, which comes from the bottom of your heart. That is called desire. I mean I learnt a hell of a lot on desire, but I did Know what sheer desire means ? I think, I have learnt from you people. You need definitely congratulations.

U, when you talk about 'U', it is Ultimate hard work. I don't know what hard work is, because we have been studying and we say oh my God ! we have been studying for eight hours and ten hours. And I did'nt have food, I did'nt have this or I did'nt have that. And he says – Papa, my son will come, I have been working very hard. But now he himself is saying– Papa! hear, what hard work means I learnt here and exactly I will tell you, even after my hard work of all sixty years, I

find it, I really did not know what the hard work is ? The way you are woking here, the way I seen two days, the way Bhaktagan was washing the dishes, cleaning them. It's like a-more than a washing machine. Probably the machine will fail. It was amazing for me to see that kind of administration. You had a co-ordination. You had tremendous amount of willingness to do it, which, after spending millions & billions of rupees or dollars, which companies spent on us to learn these things, probably, I learnt it without spending any money. In fact, I have been treated like a king and still learning. So, I think you people are so. We all people are so fortunate that we have this opportunity to learn in life. Well, we talk about 'SUCCESS' —

Now 'C' is centering or focusing. I mean – P.P. Guruji is so clear about his focus in life. Again, that is something phenomenal which we really, I mean – I did not know what focus is ? Focus for me is what ? Getting a degree ! Getting a good job ! Probably after a job, earning good money ! I won't have probably a santro car and I will go for a corolla car or buy a corolla car & I am still not happy ; because I see oh ! I must have Mecedes Benz. But is that the centre of your life ? What is happiness ? Now that centering, I think, I have learned in two days. And now, I am much more focused in my life, whatever the rest of life I have. It's amazing, again I mean - **I vow from the bottom of my heart that you have opened my eyes.**

Then we talk about again — 'E' is enthusiasm. Now, kind of enthusiasm and willingness to work - I have seen people working throughout the day-night and I have seen people again on the job. Washing dishes or filling the boxes, mithai. I mean there is no limit for you people to work so hard, so enthusiastic. And even at eight o' clock I find people having dancing and garba. This is phenomenal. I felt ashamed of myself. I came here with royal treatment, doing nothing and just experiencing and my wife says I am tired - we will go and go to sleep. I mean literally you people – Guruji has opened my eyes. Look baby, does'nt matter sixty years have passed, but there is a rest of life you have-live life. That is what is going to get a success.

The other two 'SS' — one is you know Sheer Joy. There are no rules here, there are no gradations like you have an executives and then you have managers, then general managers, c.e.o.'s - nothing about that sort or multirich person or average person or poor person. They are all equal. They are all having equal enthusiasm. Nobody was being told or forced to do things. It's again mind boggling. I mean you all people are from different walks of life. You just gathered for a few minutes or few hours or few days. I see the tremendous amount of co-ordination you have ! I mean - you just lift your head or just you know-move your eyes; People are ready to understand that what I need. They are not being taught. There are no classes probably conducting saying that oh ! If you do this, you need this. If you move your hand, you need this. No ! see the understanding. I mean you have become 'One'. There is 'Oneness' among human beings. **This is something again I have been learning, but I have experienced it here. This is what the life is ! This is what the success is !** And with all this & you are absolutely satisfied fully. Is'nt it ? Even in the morning you have the same energy.

Look at Guruji, I was just amazed. In the morning the same smile, same energy ! Even at eight o' clock, say- at the twelve o' clock I went there! Honestly, I surrender in front of you. At twelve o' clock He said - Sudhirbhai, we have to go there, the way He was enthusiastic. I was just questioning myself-Hey ! I am asking questions to myself whether I should go ? No-No, Guruji, If you could manage tomorrow morning would be better; this was in my mind. And here is a Guru, He says hey ! get up and go. That's kind of energy He has given to me in these two days and I am sure, **I give you guarantee that this energy I will keep it with me throughout my life. There is a transformation in my attitude.** There is story I am telling you. It's like the Bhilwara Temple when it was built. There are three workers, carring those block of marble - heavy marble, woking on it. Some Sant was passing by and he asked one worker - What are you doing ? देखो, पेट के लिए मैं काम कर रहा हूँ। संत बोले ठीक है। दूसरा worker था, वो भी उस पर काम कर रहा था। संत ने बोला आप क्या कर रहे हैं ? आपको दिखाई नहीं देता, मैं पत्थर को काट रहा हूँ। और... तीसरा worker था, संतजी ने उसे भी पूछा कि भई ! आप क्या कर रहे हैं ? उसने कहा – देखो, मैं एक सुंदर मंदिर बनाने जा रहा हूँ; Attitude देखो ! तीन worker की तीन different attitudes है। एक worker बोलता है कि उसको मालूम भी नहीं है कि – क्या होने वाला है ? लेकिन इसने बोला कि मैं एक सुंदर मंदिर बनाने वाला हूँ। अगर ये positive attitude हम रखें, तो मुझे लगता है कि success आपके सामने है। आपको उसके पीछे भागना जरुरी नहीं है। success आपके पीछे भागेगी।

So with these two days of tremendous amount of insight-'you know something' - that is very easy for us to teach someone or ask someone to learn. **The most difficult part in our life is to learn ourselves.** And **this is what I learnt in these two days.** How am I going to get into myself and see through and through transparently that what Sudhir Shah is ? Rather than what he is ? There is a difference. We are always in image. What I am Sudhir Shah ? I am a C.E.O. working for this or executive for this company or give a lovely card in front of you - 'This is my recognition.' I think that's not the truth. The truth is knowing yourself and probably in these two days what I learnt is how to get to know yourself. It's amazing, I mean, I see the letters with those beautiful handwriting, I have been showing these letters to all my executives - This is the beauty ! Because it comes out of your love, affection and involvement.

So, at the end of my speech I would tell you these **four 'D's are very important in life.** The duty, devotion, diligence and discipline. Now **this combination of four 'D's I have seen here, in this premises, which I have not seen anywhere in the world before.** I have been learning about it. So please remember the duty, devotion, diligence and discipline. If we have four of these things which probably you are not aware of it, but you people are practising it here; which I think it's confirmed that look Sudhir Shah please wake - up ! You have'nt lost any time yet. There are many years to go. So please do that. So with these few words it will be too formal to say that - thank you very much - too formal. But let me tell you, these words come from the

bottom of my heart and my wife Neeta joins to express my deep sence of gratitude and **the utmost happiness that I have received in these two days. I will never - ever forget.**

And if you need any service of any kind, please be free to contact me. I will be in touch with you and Guruji is always in touch with me. So thank you very much. Jay Swaminarayan !

— P. Sudhirbhai Shah

✡✡✡

अन्नकूट कृपाप्रसाद

दीवाली कार्ड का श्लोक – काकाजी कहते कि गीता का रहस्य का श्लोक यह है। अकसर गीता के रहस्य का श्लोक सब 'सर्वधर्मान परित्यज्य' कहते रहते हैं। लेकिन, काकाजी ने बताया कि रहस्य का श्लोक यह है। मुझे भी नहीं पता था कि **'अक्षरपुरुषोत्तम'** की फिलॉसॉफी भगवान श्री कृष्ण ने ही गीता में जहाँ बता दी है, वो ये श्लोक में है। हम क्या मानते हैं कि अर्जुन का विजय हो गया। अर्जुन का तो हुआ, लेकिन कींग वॉझ युधिष्ठर – राजा तो वो था। तो भगवान का कहना यह है कि जो चाहता है कि विजय हो, लक्ष्मी हो, श्री हो, कीर्ति हो – वो वहीं संभव है कि जहाँ – जिसके साथ अर्जुन जैसा भक्त, जो नारायणस्वरूप बना, वो है। ऐसा भक्त जहाँ है और जहाँ योगेश्वर कृष्ण यानि भगवान हैं – वहाँ विजय, लक्ष्मी, श्री – सब कुछ है। तो, ये अक्षरपुरुषोत्तम की फिलॉसॉफी गीता ने भी दी है ! और... इसके लिए **वे मानवस्वरूप में मौजूद होने चाहिए।**

हर सभा में हर बार हम यही कहते रहते हैं। कईयों को लगता भी होगा कि और कोई नई बात थोड़ी करने वाले हैं ? शुं नवुं छे ? एकनी एक वात कर्या करे छे। काकाजी ने एक बार कहा था – 'काका नवी वात शुं करवाना छे ? एकनी एक वात करे छे' – ऐसा विचार भी उठे, **वो हमें संत के प्रति मनुष्यभाव है।** हम कई बार कहते हैं कि पाँच-छः बातें ही हैं – सुहृद्‌भाव रखो, अंतर्दृष्टि करो, पाछा वळी जाओ, खमी खाओ, भजन करो, भगवान के भक्त का पक्ष रखो, कुटुंबभाव से जीओ ! पर, **'योगीबापा'** बोलते थे कि – **'यही चने की दाल, यही चने की रोटी जब खाएंगे तब भूख जाएगी।'**

और... काकाजी हमेशा बात करते कि कोई भी ईष्टदेव को भजो, लेकिन उसे 'टोटल' मानो। तुम्हारा उसके साथ एक **यूनीक रिलेशन** होना चाहिए। **बीलीव इन हीम एण्ड हीम ओनली !** जैसे **मीरां** बोलती थी कि **'मेरे तो एक गिरधर गोपाल दूसरो ना कोई।'** ऐसे ही टोटल उसका होकर जीओ। लेकिन, **वो मानवस्वरूप में एक बार भी तुम्हारे जीवन में आया हुआ होना चाहिए।** आज 'कृष्ण - कृष्ण', 'राम - राम' जाप करेंगे, पर ध्यान किसका करेंगे ? कृष्ण को तो देखे नहीं हैं, राम को देखे नहीं हैं। 'स्वामिनारायण' में भी हम 'स्वामिनारायण - स्वामिनारायण' मंत्र जाप करते रहेंगे, लेकिन वो स्वामिनारायण हमने कहाँ देखे ? स्वामिनारायण की अनपॅरेलल्ड फीचर – विशेषता कहो वो यही है कि इन्होंने अपना प्रागट्य ऐसे संतों की परंपरा द्वारा अखंडित रखा। कन्टीन्यूअस हाईरारकी ! मल्कानी अंकल के कार्ड्स जिनके पास गए होंगे, उसमें पढ़ा होगा – **'लिवींग मंत्र'** ! यूं यह लिविंग मंत्र है। 'स्वामिनारायण' को प्रगटाए हुए ऐसे संत – हमारे हरिप्रसादस्वामिजी, हमारे पप्पाजी, हमारे काकाजी, प्रमुखस्वामी महाराज, अक्षरविहारीस्वामिजी, जशभाई साहेब वगैरह मानवस्वरूप में मौजूद हैं। उनकी स्मृति के साथ 'स्वामिनारायण' रटना – यह एक **'स्पिरिच्युअल टॅकनीक'** है। **वो मंत्र का फल कई करोड़ गुणा बढ़ जाएगा।** जैसे – जब यहाँ माईक नहीं था और मैं बोलता था तो आगे की दो - चार लाईनें ही सुन पाती थी। लेकिन ये रखने के

बाद आवाज़ काफी दूर तक जाती है। ऐसी वो स्पिरिच्युअल टॅकनीक है। **मंत्र वो ही है – 'स्वामिनारायण'! ब्रह्मस्वरूप संत जिन्हें आपने देखे हों - आपका संबंध हो, इनकी स्मृति से वो जपेंगे - तो एक मंत्र का फल कई करोड़ गुणा!** और... **ऐसा प्रगटीकरण जहाँ होगा, वहाँ तुम्हें सत्संग हरियाला लगेगा - 'लीलुंछम लागे' – भर्युं भर्युं हैयुं थई जाय।** वहाँ समझना कि भगवान की शक्ति सांगोपांग – इन टोटालिटी काम कर रही है। ये एक बहुत बड़ा रहस्य कार्ड में बता दिया।

...भगवान और भक्त की युगल उपासना है – जैसे राधा और कृष्ण, शिव और शक्ति, सीता और राम, हनुमान और राम! काकाजी तो कहते कि – 'राधा वगरना कृष्ण बोंडा लागे अने कृष्ण वगर राधानुं कोई अस्तित्व नथी।' गुणातीतानंदस्वामिजी ने इस बात को अलग ढंग से करी कि जिसे भगवान का संबंध है उसका एक पाँव अक्षरधाम में है, पर जिसका ऐसे संत के साथ भी संबंध है – उसके दोनों पाँव अक्षरधाम में हैं। एक पाँव के ऊपर हम ज्यादा चल नहीं पाएंगे – काफी देर खड़े भी नहीं रह पाएंगे। दो पाँव पर होंगे तो स्टेबल रहेंगे - चल पाएंगे - दौड़ भी पाएंगे। यूं, **जिसे सत्संग में स्टेबल रहना हो, उसे भगवान और संत – दोनों के साथ का संबंध रखना चाहिए।**

...'अचल नीति' का मतलब ऐसी 'शुभ' नीति है; वो अचल नीति है! वो क्रुकेड वेईझ नहीं अपनाएगा। सो, कहते हैं कि संस्कार भी भगवान और संत के संबंध से आते हैं। इसे हमारे हरिप्रसादस्वामिजी अलग ढंग से कहते हैं – धर्म की बात सब करते हैं, लेकिन जहाँ धर्मी होगा वहीं धर्म रहेगा; क्योंकि **धर्म धर्मी के अधीन रहता है।**

अभी मैं सुधीरभाई से यही बात कर रहा था कि हर एक को सुख चाहिए, शांति चाहिए, संस्कार चाहिए, पवित्रता चाहिए। लेकिन जिस घर में ऐसे संत का स्थान नहीं होगा, उस घर में हार्मनी कहो, सुख, शांति, आनंद कहो – वे सिर्फ डिक्शनरी के शब्द रहेंगे, महसूस नहीं कर पाएंगे वो।

...काकाजी ने प्रगट की उपासना की सारी बातें अपने जीवन में अजमा कर करी और... हमें ये सब कॉरोलरीज़ दी थी। इनकी एक ब्रॉशर है 'एप्लाईड ब्रह्मज्ञान'! **'ब्रह्मज्ञान' सिर्फ पढ़ कर बोलने - करने, उपदेश देने नहीं, 'मैंने मेरे जीवन में एप्लाई करा हुआ है। और मुझे लगा है कि ये बिलकुल बराबर है। जो कोई भी यूं जीएगा, उसको यह प्राप्ति होगी।'**

काकाजी का पहले से एक नॅचर है कि कोई भी अच्छी चीज उनके पास आई हो, तो वे उसे अपने साथियों से बाँट लेंगे। खूब बड़ी बात है यह। हमारे पास कोई अच्छी चीज होगी, तो वो हम अलमारी में रख देंगे कि कोई आएगा - देखेगा - माँगेगा तो महोब्बत में दे देना पड़ेगा; इसलिए रखे रखो। **काकाजी को स्पिरिच्युअल मॅथेमेटिक्स पता था।** उपनिषद् में है ना – ॐ 'पूर्णमिदं पूर्णमदः पूर्णात् पूर्णमुदच्यते, पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।' काकाजी कहते – सौ में से सौ दे दो, तब भी तुम्हारे पास सौ रहेगा – ये स्पिरिच्युआलिटी है! पर, हमारे दिमाग में ये नहीं बैठेगा। लेकिन उपनिषद् में यह है कि पूर्ण में से पूर्ण ले लो, तब भी पूर्ण बचेगा! हमें ऐसे संतों की वाणी में विश्वास रखना चाहिए। महाराज ने इसलिए लोया - १०वें वचनामृत में कहा है कि 'भगवान और संत जो बात करते हैं, वो वाकई ऐसी है' – यूं जो माने वह सुखी है। हम क्या मानते हैं? 'ठीक है, बड़े संत की बात बड़ी होती है। भगवान भी बड़े, इनके संत भी बड़े और इनके गप्पे भी बड़े!' लेकिन जो मानेगा वो सुखी हो जाएगा। **'भगवान और संत जे वात करे छे, ए एमज छे' - यह जिसका दिमाग मान लेता है, वो सुखी है। बाकी भगवान और संत मिलने के बावजूद भी मेन्टल जिमनेस्टिक में वो हमेशा परेशान रहेगा।** भगवानना खोळामां बेठा, पण रडता दीठा। भगवान की गोद में कैसे रोए? संबंध नहीं किया!

...यह एक लिविंग फिलोसोफी है। नया साल है – हम सब निष्ठा वाले भी हैं ; लेकिन काकाजी बोलते थे ना कि प्रगट के तो हैं ही - प्रत्यक्ष का होना है। हम सब जानते हैं कि भगवान मानवस्वरूप में प्रगट हैं। लेकिन जैसे कि काकाजी कहते कि हवा रूस में भी है, जर्मनी में भी है, यहाँ भी है – सब जगह पर है। ऐसा नहीं है कि इंडिया आना है, तो ऑक्सीजन के सिलेन्डर्स लेकर चलो। यहाँ भारत में भी हवा है। इस तरह **ऐसे संत जो 'ब्रह्म' के मूर्तिमान स्वरूप हैं** – मानवस्वरूप में हैं, उनको हृदयाकाश में याद करके हम पुकार करेंगे, तो जैसे हवा यहाँ है वैसे ही हम जहाँ होंगे, वहाँ वे इन्सटॅन्ट जवाब देंगे – उन्हें ढूँढना नहीं पड़ेगा। **'ब्रह्म' का एक लक्षण है – वो व्यापक -सर्वत्र है, प्रेरक है, प्रवर्तक है।** ये अजमा कर देखना हं। यहाँ आए हो, तो काकाजी की मूर्ति है – शास्त्रीजी महाराज की मूर्ति है, योगीजी महाराज की मूर्ति है, गुणातीतानंदस्वामिजी की मूर्ति है – ये सारे एक बार मानव स्वरूप में धरती पर आ गए हुए व्यक्ति स्वरूपों हैं – अक्षरब्रह्म का! इनका सिमरन करके मंत्रजाप करेंगे, वे इम्मीजिएट – इन्सटॅन्ट जवाब देंगे। नई टॅक्नोलॉजी आई है ना? **हम सब के लिए भगवान स्वामिनारायण ने स्पिरिच्युआलीटी मेईड इज़ी – स्पिरिच्युआलीटी सिम्पलीफाईड करके दी है।**

...कल नया वर्ष है ना? गुजरात के अखबारों में एक कॉलम आएगी। 'आवतुं वर्ष आपनुं केवुं जशे?' बधां एमां डोकां घालशे। जेने भगवान ने संतनो अति दृढ़ आशरो हशे, वो उस ओर देखेगा तक नहीं – नज़र ही नहीं डालेगा। उसे तो – 'मुझे मेरे प्रभु जो करेंगे, वो ठीक ही होगा।' आज के दिन एक बात पक्की समझ कर जाना कि जिसे ऐसे भगवान का – प्रगट संत का आसरा हो, उसके ऊपर कोई ग्रह, कोई पनौती या किसी ने कुछ कर दिया हो उसका कोई असर नहीं होता। **काल, कर्म और माया का कायदा अपने लिए नहीं है।** दिल की सच्चाई से – 'अब कभी नहीं करूँगा' – यूं करके कोई गद्गद् कंठ से प्रार्थना करे तो – वो कहते हैं ना, मीसडीड्स भी सब वेव ऑफ हो जाता है।

कईयों को बस एक शौक लगा होता है। थोड़े दिन होते नहीं कि 'मने टॅनशन थई गयु – मने चिंता थाय छे।' पर उसके बजाय भगवान और संत जो मिले हैं, उसका चिंतन करके भजन करा करें। ये करते नहीं हैं ना - इसलिए हमें अनुभव नहीं होता है। कई बार ऐसी शंका भी रहती है कि पता नहीं, भगवान सुनेंगे या नहीं? अनुभव भी होते हैं, लेकिन दूसरी ओर अपना डाउटींग माईन्ड सोचता है कि उस दिन हो तो गया था, लेकिन कहीं फ्लूक हो गया हो और हम मानते हैं कि भगवान और संत ने कर दिया! और इस भरोसे अभी बैठे रहेंगे तो? यह सारा माईन्ड का दोष है। इसलिए राकेशभाई व दीदी ने भजन में बहुत अच्छा लिखा – **सीखें मन का असंग।** वो सीखना पड़ता है।

जीव का स्वभाव है आनंद में रहने का। जीव चाहता है कि मुझे आनंद मिले, मुझे सुख मिले, मुझे शांति मिले। मन का स्वभाव है जीव को दुःखी करने का। कई बोलते हैं ना कि हमारा मन हमें बहुत परेशान करता है। मन बहु पजवे छे। तो क्यों उससे जुड़े रहते हो? अगर तुम्हारा मन तुम्हें परेशान करता है, तो तुम्हें बता तो दिया है कि 'ब्रह्म' का स्वभाव है आनंद प्रगटाने का – आनंदोब्रह्म! एक बात बताऊँ? यहाँ आते हो तो आप सब खुश खुशहाल हो जाते हो। सुधीरभाई की पत्नी ने कहलवाया कि मैं स्वर्ग में आ गई हूँ ऐसा लग रहा है, खुश हो गए वो। क्यों? काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी - जो ब्रह्म की मूर्तियाँ हैं, वो आनंद प्रगटा देती हैं। तो वो मूर्तियाँ साथ में ही लेकर घूमा करें तो? हम क्या करते हैं कि जब जरुरत पड़ी हो, तो जैसे कि प.पू. काकाजी कहते थे – 'बम्बावाला - बम्बावाला' करके उनको याद करते हैं। बेशक, अपने भगवान भी खूब निर्मानी हैं। हमेशा हम उन्हें भूल जाएं, फिर भी जब

याद करें तो वे तुरंत मदद के लिए दौड़े आते हैं। उसकी बजाय हम उन्हें हमेशा याद करा करें तो! **वाकई भगवान खूब निर्मानी हैं।** इसलिए बोला है ना कि – **'जेना निरमानी भगवान, तेना जन ने होय केम मान!'** वो हमें सीखना है।

...कल हम रात को सवा ग्यारह बजे पवन के यहाँ गए। इनके साथ ऐसा होता था कि पिछले एक साल से मैं कहता था कि मैं आऊँगा-आऊँगा- आऊँगा। बाकी के घर पर तो बीच में कभी हो भी आया, पर इनके यहाँ नहीं जा पाया था। तो मैंने सोचा कि साल का लेखा-जोखा क्लीअर कर आऊँ, ताकि फिर बाकी ना रहे। तो रात को सवा ग्यारह को वहाँ गए। वो खूब खुश हो गए। इन्हें यूं खुश देख कर मुझे एक बात याद आ गई। महाराज के समय में झीणाभाई करके एक भगत था - पंचाला में। महाराज के साथ उसे खूब एटेचमेन्ट। जिसको एटेचमेन्ट होता है ना उसको हमेशा ऐसा होता है कि मैं जो कहूँ वो प्रभु करें, मैं जो लाऊँ वो प्रभु खाएं...। उन्होंने महाराज को कहा कि महाराज काफी समय से आप हमारे गाँव-पंचाला नहीं आए। महाराज ने बात सुनी - अनसुनी जैसी कर दी और जा नहीं पाए होंगे। झीणाभाई को दिल में खूब दुःख हुआ – बड़ा बुरा लग गया और... लंबे अरसे तक वे पंचाला से गढडा आए नहीं! महाराज ने पूछा कि भई! झीणाभाई नज़र नहीं आता – दिखता नहीं है। तो भक्तों ने बताया – महाराज ए रिसायो छे - मानो, रूठा हुआ है। ऐसा नहीं कि सत्संग छोड़ दिया है, लेकिन रूठा हुआ है। महाराज ने पूछा – क्या हुआ? तो कहा कि वो बुला रहा था और आप उसके यहाँ गए नहीं ना! महाराज ने तब कहा – हाँ, भगवान और संत अपने यहाँ आएं, उससे भगत खुश जरुर हो जाए, लेकिन ना आने पर वो रूठे-करे नहीं। कल मैंने इनके यहाँ देखा, इनको बहुत खुशी हो गई। कम से कम पवन तीन बार मेरे पास बोला – 'गुरुजी! धीस इझ ए सरप्राईज धॅट यू आर हियर! आई कॅन नोट बिलीव धीस।' उनको सब को ऐसा था कि इस साल तो नहीं आएंगे। सो, दोनों पहलू देखने को मिले कि भगवान और संत अपने यहाँ आएं तो खुश, नहीं आएं तो भी खुश। और किसी के मन में ऐसी रंजिश भी नहीं कि तुम्हें तो पवन-संगीता के यहाँ ही जाने का टाईम मिला, हमारे यहाँ आने के लिए वो डायबिटिज बीच में आ जाता है। माईन्ड है! कई ऐसा भी सोच सकते थे कि-हाँ, पैसे वालों के यहाँ जाएंगे, हमारे यहाँ कहाँ आएंगे? यह अपना सारा माईन्ड का कॉम्पलेक्सिस है। बस, उससे ऊपर उठ कर भक्तों के अंदर रसबस हो जाएं, तो **'कभी खुशी-कभी गम नहीं'। जीवन की खुशी हमेशा बनी रहेगी।**

...आज एक बात खूब समझ कर जाना। **'भगवान के अस्तित्व का स्वीकार।'** मानवस्वरूप में भगवान का अस्तित्व ऐसे संत द्वारा 'प्रगट' है। वो मेरे हैं, हम इनके हैं। भगवान मेरे हैं - संत मेरे हैं, हम इनके हैं। और वो सर्वोपरि हैं।

इसलिए इनकी ब्राह्मीशक्ति – सुपरामेन्टल पॉवर काल, कर्म, माया, ज्योतिष, ग्रह-पनौती, तंत्र से मेरा कभी भी अहित नहीं होने देगी। पर हम कैसे हैं? काकाजी बोलते थे – **आप श्रद्धालु हैं, लेकिन 'श्रद्धालु नास्तिक' हैं।** हम क्यों नहीं समझते कि ज्योतिष भावि को प्रीडीक्ट कर सकता है, पर भगवान और संत की शक्ति अगर हम उनके होंगे, तो भावि को – डेस्टीनी को बदल सकती है। सो, भगवान और संत की छत्रछाया जो मिली है उसके नीचे रहें। **मल्कानी अंकल** इसको अंग्रेजी में कहते हैं – **अन्डर धी अम्ब्रेला ऑफ धी सुप्रीम!** इससे हम हमेशा ऐसी हर बात से बचे रहेंगे। 'रामकृष्ण मिशन' के शारदामणि - माताजी कहते थे – **हू सो एवर टेईक्स रेफ्यूज़ इन धी गॉड – डॅस्टिनी बाई हर ओन हेन्ड्स स्ट्राईक्स ऑफ, वॉट एवर शी हॅज़ रीटन फॉर हीम।** बस आज मेरी कही ये बात को दिल की सच्चाई से मान कर आप लेकर जाओ और अजमाओ।

...यहाँ जो पीछे पिक्चर है, इस पर लिखा है – **गॉड लीव्ज़ इन भारत।** आप कहोगे कि नहीं, भगवान तो सर्वत्र हैं। बात बराबर है; लेकिन रहते भारत में हैं। मानवस्वरूप में प्रगटीकरण भारत में रहा है – रहेगा। ये बात हमारे आशिष ने पिक्चराईझ करी है। स्वामिनारायण की यह विशेषता है - मानवस्वरूप में वे अखंड प्रगट रहे हैं। जैसे कि शाम को सूर्य अस्त हो जाता है, फिर दूसरे दिन कहना नहीं पड़ता कि यह सूर्य है। यहाँ नोमीनेशन नहीं है - ईलेक्शन नहीं है! उसके तेज से, उसकी ऊर्जा से, उसकी गर्मी से – सभी को ख्याल पड़ जाता है कि ये सूर्य उगा है! इस तरह मानवस्वरूप में एक ज्योति अंतर्धान होती है, तो वे इमीजिएटली दूसरी प्रगटा के ही गए होते हैं। सर्वोपरि साधु का ये लक्षण है कि ज्योत से ज्योत जलाए रखे। बाकी हर जगह देखोगे तो एक ज्योति झबूकी और उसके बाद अंधेरा! फिर उस सोसाईटी को कहो – उस इन्स्टीट्यूशन को कहो समाज के साथ रॅपर्ट बनाए रखने के लिए समाज सेवा का आधार लेना पड़ता है। वो फिर ये काम करा करते हैं; क्योंकि धॅ हॅव लॉस्ट धी स्पिरिच्युआलीटी! हमें जब वो सहारा लेना पड़े, तो हमें जरुर समझ लेना पड़े कि हम स्पिरिच्युआलीटी खो रहे हैं। बाकी महर्षि अरविंद तो कितनी दूर पांडीचेरी जाकर बैठे थे, लेकिन वे प्यॅारली स्पिरिच्युअल थे, तो लोगों को वहाँ तक खींचते रहते थे। उन्हें एडवर्टाईझमेन्ट नहीं करनी पड़ी! और **ऐसी 'स्पिरिच्युआलीटी' संत के संबंध से पाई जाती है - ना कि कल्टीवेट करी जाती है। स्वामी रंगनाथानंदजी ने कहा था – 'स्पिरिच्युआलीटी कॅन बी ट्रान्स्मीटेड, जस्ट एझ आई कॅन गीव धीस फ्लावर टु यु!**

और... हम मानते हैं कि हमें संबंध है, पर वो '**अनन्यभाव**' का संबंध होना चाहिए! **अनन्यभाव का संबंध!** हाँ, संबंध सभी रखने हैं, लेकिन अनन्य संबंध अलग बात है। फिर 'कभी खुशी - कभी गम नहीं रहेगा' – खुशी ही खुशी! सुख, शांति, समृद्धि का ढेर अपने यहाँ आएगा – खुशीना गाडा आपणे घेर छूटशे। सो, प्रगट स्वरूपों को जान कर नहीं – पहचान कर उनसे अनन्यभाव का दृढ़ संबंध कर लें। सुख, शांति, आनंद और समृद्धि से भरपूर रहने की यह चाबी काकाजी ने बता दी। अब चाबी लगानी, नहीं लगानी वो हमारे हाथ में है।

– प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन

अन्नकूट - २२ अक्तुबर '०६, रविवार *(ध्वनिमुद्रण द्वारा संकलित)*

✡✡✡

अलविदा पू. मम्मीबा.....

पू. मम्मीबा – यानि **परम मुक्त ललिताबहन कांतिभाई अमीन**, जिन्हें गुणातीत समाज के अधिकांश मुक्त '**मम्मीबा**' के नाम से ही पहचानते हैं, वे करीब डेढ़ साल से अनकॉन्सियस अवस्था में रहे और... दिनाँक १३ अक्तुबर की दोपहर ३:३० बजे उनके अक्षरधाम सिधारने की खबर दिल्ली मंदिर में मिली। आश्चर्य की बात है कि उसी दिन तबियत ठीक ना होने के कारण प.पू. गुरुजी दिन में विश्राम कर रहे थे और प.पू. गुरुजी सोकर उठे तो उनकी आँखों में आँसू थे। उन्होंने बताया भी कि पता नहीं आज मुझे सोते हुए खूब यानि खूब रोना आया और... तभी पू. मम्मीबा के अक्षरवास होने की खबर मिली! दरअसल, प.पू. गुरुजी युवक अवस्था में सत्संग की शुरुआत से ही पू. कांतिकाका के परिवार से खूब अपनेपन से जुड़े हुए हैं। युवक के रूप में प.पू. गुरुजी उन्हें 'ललिताकाकी' कह कर पुकारते और... पू. मम्मीबा को भी प.पू. गुरुजी से एक लगाव - सा था। सो, महाराज ने पू. मम्मीबा को धाम में ले जाते समय प.पू. गुरुजी के साथ मानो तार जोड़ दी थी।

पू. मम्मीबा के जीवन का दर्शन करें तो कल्पना से परे के अजोड़ एवं मूक समर्पण की एक मूरत तादृश होती है। १३ वर्ष की आयु में पू. कांतिकाका के साथ उनका विवाह हुआ। गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के वचन से पू. कांतिकाका मुंबई में नौकरी - व्यापार करने आए। तब से पू. मम्मीबा भी मुंबई में रहने आईं। सास नहीं, बल्कि एक दिव्य माँ के रूप में प.पू. सोनाबा को पाकर धन्य हुई। प.पू. सोनाबा और पू. कांतिकाका के जीवन में केवल गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुवर्य योगीजी महाराज का ही प्रथम स्थान था... उनका घर स्वरुपलक्षी सेवा - भक्ति का मानो निरंतर जीता जागता अखाड़ा था। सो, प.पू. सोनाबा के संबंध से गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य योगीजी महाराज के रूप में प्रगट प्रभु की निश्रा पाकर गृहस्थाश्रम में रहते हुए दिव्यता के मार्ग पर अग्रसर हुई। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने प.पू. काकाजी और पू. कांतिकाका को आपस में 'भाई' बनाया था... तब से मानो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सिद्धांत पर गुणातीत समाज की स्थापना करने इन दो परिवारों ने शुरुआत करी। जैसे गाँधीजी के साथ कस्तूरबा गाँधी के भारत आने पर एक प्रेस रिपोर्टर ने पूछा कि – 'गाँधीजी के साथ आप यूं जो घूमती-भटकती रहती हो, वह आपको पसंद है?' तब सहजता से उन्होंने उत्तर दिया – **'स्त्री की गरिमा उसके पति के नक्शेकदम पर चलने में ही समाई है।'** ठीक इसी प्रकार पू. मम्मीबा ने पू. कांतिकाका के पीछे -पीछे चलने में ही जीवन की धन्यता मानी!

स्पष्टवक्ता, लेकिन नेपथ्य में रह कर सेवा करने वाली पू. मम्मीबा ने कभी ऐसी कोई अपेक्षा नहीं रखी कि उन्हें बड़े सोफे पर बिठाया जाए या सम्मान के हार पहनाए जाएं। सार रूप में निहारें तो प.पू. सोनाबा से सच्ची सूझ पाकर उन्होंने तन, मन, धन से गुणातीत समाज की खूब अपनेपन से सेवा करी है और उसकी नींव में वे समा गईं!

* गुरुवर्य योगीजी महाराज ने ५१ पढ़े - लिखे साधुओं को दीक्षा देने का मानो एक यज्ञ आरंभ किया था। उसमें प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व प.पू. सोनाबा ने पूर्ण सहयोग दिया और इस यज्ञ में पू. कांतिकाका व पू. मम्मीबा ने भी खूब अहोभाव से आहुति दी। तत्पश्चात् बहनों के भगवान भजने की शुरुआत हुई, तो उसमें पू. मम्मीबा ने भी मानो एक साधक की भाँति खुद को शामिल कर लिया। प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं पू. सोनाबा की सेरेछाया में अन्य साधक बहनों की भाँति पू. मम्मीबा ने भी योगी परिवार के कायदों का प्रशिक्षण लिया!

* गुरुवर्य योगीजी महाराज ने ५१ संतों को दादर मंदिर में रखे थे। सो, उनके लिए ताड़देव से बहनें नाश्ता इत्यादि बना कर भेजती रहती थीं। तब बहनों के साथ रसोई बनाने का बीड़ा पू. मम्मीबा ने अपने हिस्से उठा कर दिन - रात भक्तों की खूब सेवा करी। इतना ही नहीं, दोनों घर की रसोई का खर्च ज्यादा ना हो इस हेतु – एक ही जगह ६/डी वाले फ्लैट में (जहाँ प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी विराजमान रहते थे) सालों तक रसोई बनाई। और... रात को पू. कांतिकाका के लिए भोजन की थाली वे ८/सी वाले फ्लैट में ले जातीं।

एक बार रात को वे पू. कांतिकाका के लिए भोजन की थाली ले जाना भूल गईं। देर रात्रि पू. कांतिकाका ने आकर जब खाना माँगा, तो पू. मम्मीबा एकदम बोलीं – ओय माँ! ऊपर से आपकी थाली लाना तो मैं भूल ही गई! तब पू. कांतिकाका थोड़ी देर चुप होकर बैठ गए और युवक के रूप में प.पू. गुरुजी वहीं मौजूद थे, सो उनकी ओर देख कर बोले – 'चल आना है? हम घूम आएं।' रास्ते में उन्होंने इधर-उधर की बातें करीं, पर खाने की थाली के बारे तनिक भी रोष नहीं जताया और मरीनड्राईव पर सेन्डवीच इत्यादि खाकर प.पू. गुरुजी को घर छोड़ कर वे ताड़देव लौटे। यह छोटा - सा प्रसंग बताता है कि

पू. मम्मीबा भक्तों की सेवा में कितनी ओतप्रोत हो गई होंगी कि अपने पति के भोजन की थाली लाने तक भूल गईं! दूसरी ओर, सोचने जैसी बात है कि-जो **सभी के लिए सारा दिन रगड़ता रहता हो, खुद की घरवाली घर का काम छोड़ कर रसोई बनाने सारा दिन ऊपर घिसती रहती हो; फिर, रात को थके-पके घर लौटने पर जब खुद के खाने का ही ठिकाना ना हो, तब भी किसी के प्रति कोई भावफेर नहीं !** साधु प्रकृति के उन दोनों के **जीव में सत्संग के प्रति यह कैसा दिव्यभाव होगा?** वाकई, उन्होंने हमारे लिए ऐसा आदर्श स्थापित किया।

यूं, पू. कांतिकाका ने सिर्फ स्वरूपों में ही नहीं, बल्कि उनके संबंध वाले सभी संतों - हरिभक्तों की सेवा में खुद को विलीन किया। एक बार प.पू. गुरुजी को पंजाब जाना था। पू. कांतिकाका प.पू. गुरुजी की गाड़ी ड्राईव करके ले गए। उन्हें मना करा तो वे यही बोले कि – नहीं, मुझे ड्राईव करना ही है। इतना ही नहीं, लौटते हुए देर रात्रि को ड्राईव करते हुए जब उन्हें नींद आने लगी, तो सोडे से अपनी आँखे धोई और पूरे रास्ते गाड़ी चला कर लेकर गए। यूं उन्हें प.पू. काकाजी के संबंध से मुक्तों की भी कितनी महिमा होगी ना !

* सभी जानते हैं कि बहनों के भगवान भजने के लिए प.पू. सोनाबा की दो सुपुत्री पू. ज्योतिबहन एवं पू. ताराबहन ने सर्वप्रथम शुरुआत करी। इसी प्रकार पू. मम्मीबा ने अपने दो पुत्रों को एवं तीन पुत्रियों को भगवान भजने त्यागाश्रम के मार्ग पर अग्रसर किया और एक सुपुत्र प.भ. घनश्यामभाई तो गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी पूर्णतः गुणातीत समाज की सेवा में समर्पित हैं। धन्य है ऐसी जननी जिसने अपनी सभी संतानों को प्रभु भजने अग्रसर किया।
* धन समर्पण की भी बात करें तो जब प.पू. काकाजी पर केस हुआ, तब प.पू. सोनाबा के पास जितने भी गहनें इत्यादि थे वे बेचने इकट्ठे किए... उसमें से उन्होंने पू. मम्मीबा के गहने भविष्य के बारे सोच कर अलग निकाले, तो तुरंत पू. मम्मीबा ने स्पष्ट कहा कि **जो आप लोगों का होगा, वो मेरा भी हो जाएगा**। सो, ये गहने भी आप इसी में ले लेना। यूं, पू. मम्मीबा ने अपना सर्वस्व सत्संग के लिए न्योछावर कर दिया।

मूलतः देखें तो मुबंई जैसे शहर में वे ताड़देव की चार दीवारी से बाहर सत्संग की सेवा-कार्य के अलावा ज्यादा कहीं नहीं गई। बस ८/सी से ६/डी तक यानि – प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. सोनाबा और पू. कांतिकाका जो कहें वही करना उनकी दुनिया थी और धाम, धामी व मुक्त उनके सगे-संबंधी! और... यह भी कितना सांकेतिक है कि ८२ वर्ष की आयु में अभी पू. मम्मीबा ने शरीर छोड़ा, तब संजोगवश उनके परिवार का कोई सदस्य मौजूद नहीं था। उनके सुपुत्र पू. घनश्यामभाई तबियत नासाज़ होने के कारण अमेरिका में अस्पताल में थे और इसी कारण पौत्र प.भ. दर्शन तथा प.भ. विजय भी वहाँ से आ नहीं पाए। सो, जीव के सच्चे सगे - संबंधी जो पू.मम्मीबा ने दिल की सच्चाई से माने थे, उन **ताड़देव के योगेश्वरों** एवं मुंबई के हरिभक्तों ने उन्हें अंतिम विदाई दी।

आजीवन पू. मम्मीबा ने पूरे गुणातीत समाज की खूब सेवा करी। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज से लेकर गुरुवर्य योगीजी महाराज, गुरुहरि प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई – सभी गुणातीत स्वरूपों ने इनके घर को अपना निजी घर समझते हुए अपना हकदावा रखा। सारा दिन घर पर संतों - भक्तों का आना - जाना लगा ही रहता। तब हमेशा नारियल की भाँति ऊपर से सख्त दिखाई पड़ती पू. मम्मीबा मोम जैसे मुलायम हृदय से

हमेशा भक्तों की सेवा-ख़ातिर में लगी रहतीं। यहाँ महाभारत सीरियल का एक वाक्य सहज याद आता है। राजा धृतराष्ट्र 'विदुर' से सलाह-मश्वरा लिया करते थे; लेकिन विदुर जब उन्हें छोड़ जाते हैं, तब धृतराष्ट्र मन ही मन विदुर से कहते हैं कि – **मुझे तुम्हारे वाक्य कड़वे लगते थे, पर तुम्हारे होने का एहसास करवाते थे।** इसी प्रकार पू.मम्मीबा ने आजीवन हर एक को एक अपनेपन से कई बार डाँटा भी तो वो भी लगाव के कारण ही। सो, आज उनकी स्थूल देह से गैरमौजूदगी सभी को जरूर खलती भी है।

और... पू. मम्मीबा ने रात – दिन देखे बिना जीवनपर्यंत अत्यधिक सेवा करी, तभी अंतिम दिनों में सभी भक्तों से उनकी सेवा करवाने ही मानो श्रीजी महाराज ने पू. मम्मीबा को बीमारी दी। इससे भी अधिक, जैसे कि कहा जाता है कि **शुद्धि दो प्रकार से होती है – 'योग' से या 'रोग' से।** तो, पू. मम्मीबा के चैतन्य को रोग से आख़िर शुद्ध करके ही महाराज ले गए। यूं, पू. मम्मीबा ने ऐसा जीकर जीवन उज्जवल बनाया और मृत्यु को भी धन्य बनाया! उनकी स्वरूपनिष्ठा व उनके द्वारा करी अत्यधिक सेवा के आदर्श द्वारा वे हमेशा हमारे बीच रहेंगे ही और समय - समय पर हमें प्रेरित करते ही रहेंगे। ऐसे अनुपम आदर्श की स्रोत पू. मम्मीबा को कोटि - कोटि प्रणाम...

श्रीजी महाराज दादाखाचर, जीवुबा - लाडुबा के परिवार को सबके लिए आदर्श रखने साथ में लाए थे, ठीक उसी प्रकार मानो गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुवर्य योगीजी महाराज अक्षरधाम से ही गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज के परिवार के साथ प.पू. सोनाबा - पू. कांतिकाका के परिवार को लाए... सारे गुणातीत समाज का एक - एक मुक्त इस दिव्य परिवार के ऋणों को कभी भी भुला नहीं पाएगा।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	16.11.2006,	गुरुवार	—	एकादशी – व्रत
(2)	दि.	1.12.2006,	शुक्रवार	—	एकादशी – व्रत, श्रीमद् भगवद्गीता जयंती
(3)	दि.	16.12.2006,	शनिवार	—	एकादशी – व्रत, धनुर्मास प्रारंभ
(4)	दि.	30.12.2006,	शनिवार	—	एकादशी – व्रत
(5)	दि.	3.1.2007,	बुधवार	—	पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन
(6)	दि.	14.1.2007,	रविवार	—	मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(7)	दि.	15.1.2007,	सोमवार	—	एकादशी – व्रत ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

TO,